जिसने सेब के बीज बोए

कैरोल, हिंदी : विदूषक

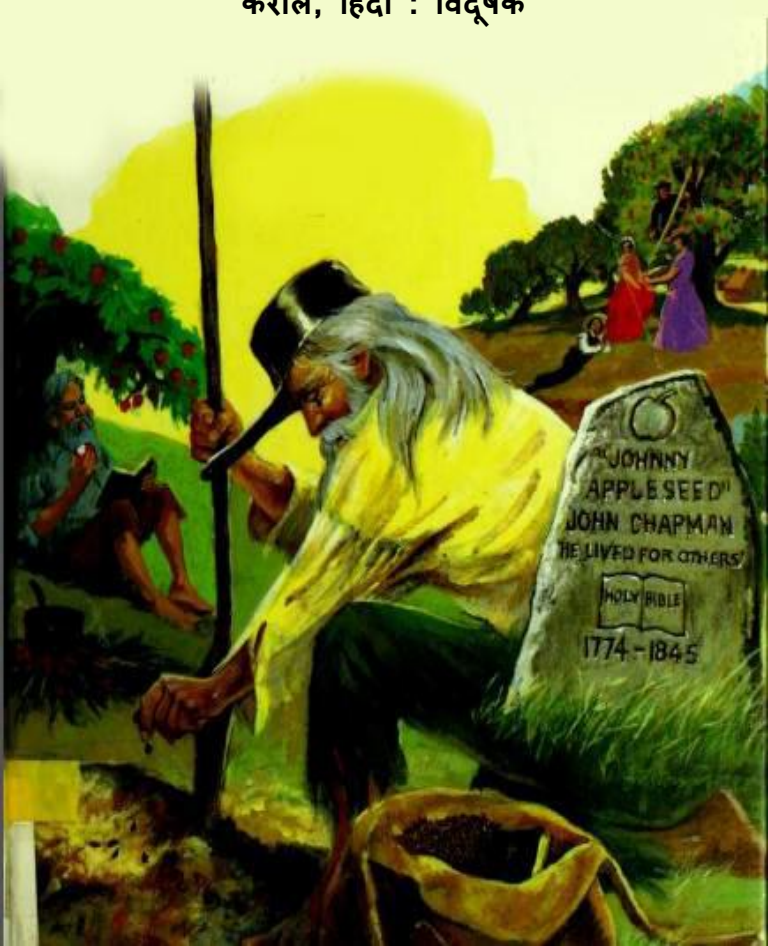

जिसने सेब के बीज बोए

कैरोल, हिंदी : विदूषक

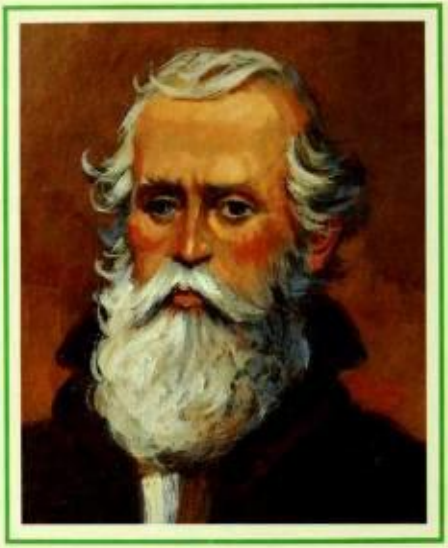

जॉन चैपमैन (1774-1845)

जॉन चैपमैन एक असली व्यक्ति थे.

वो 1774-1845 के बीच जीवित रहे.

अपनी ज़िन्दगी में उन्होंने हजारों सेब के पेड़ लगाए.

इसलिए लोगों ने उन्हें जॉनी एप्पलसीड के नाम से बुलाना शुरू किया.

यह उनकी कहानी है.

सेब के पेड़ों के फूल बेहद सुन्दर होते हैं

रहस्यमयी कहानी

जॉन चैपमैन की शुरूआती ज़िन्दगी के बारे में हमें कुछ भी ठीक से नहीं पता.

उनका बचपना रहस्य में छिपा है.

पर हमें इतना पता है कि जॉन का जन्म 26 सितम्बर 1774 को लियोमिन्स्टर, मेसाचुसेट्स में हुआ था.

कुछ लोगों का कहना है कि उस दिन सेब के पेड़ों में फूल खिले थे.

पर यह बात सच नहीं हो सकती क्योंकि सेब के पेड़ सितम्बर में नहीं खिलते हैं.

जॉन अपने परिवार के साथ गरीब स्थिति में एक छोटे घर में रहता था.

जल्द ही जॉन के पिता को, इंग्लैंड के खिलाफ क्रन्तिकारी युद्ध में लड़ने जाना पड़ा.

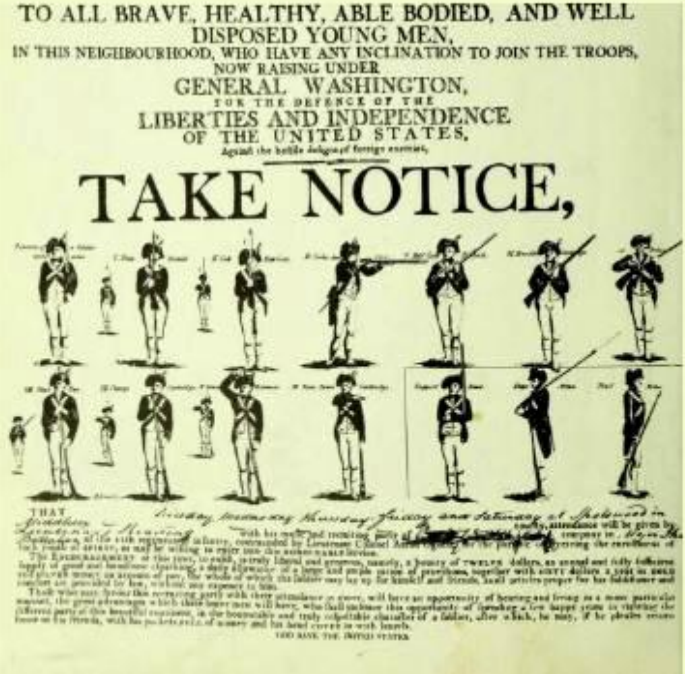
TO ALL BRAVE, HEALTHY, ABLE BODIED, AND WELL DISPOSED YOUNG MEN,
IN THIS NEIGHBOURHOOD, WHO HAVE ANY INCLINATION TO JOIN THE TROOPS, NOW RAISING UNDER
GENERAL WASHINGTON,
FOR THE DEFENCE OF THE
LIBERTIES AND INDEPENDENCE
OF THE UNITED STATES,
Against the hellish designs of foreign enemies,
TAKE NOTICE,

दो साल की उम्र में जॉन की माँ का देहांत हो गया.

तब शायद उसके दादा-दादी और बड़ी बहिन एलिज़ाबेथ ने ही उसकी परवरिश की होगी.

किसी को इसके बारे में पक्की तौर पर नहीं पता.

पर जब जॉन के पिता युद्ध से वापिस लौटे तो वो अपने साथ नई पत्नी लूसी लेकर आए.

तब जॉन की उम्र छह साल की थी.

शायद जॉन, पिता नथानिएल और सौतेली माँ लूसी के साथ लॉन्गमीडो, मेसाचुसेट्स के एक छोटे घर में रहने गया होगा. पर वो भी किसी को पक्की तौर पर नहीं पता.

पर हमें इतना ज़रूर पता है कि जल्द ही उनका घर पूरी तरह से भर गया. क्योंकि नथानिएल और लूसी के दस बच्चे हुए.

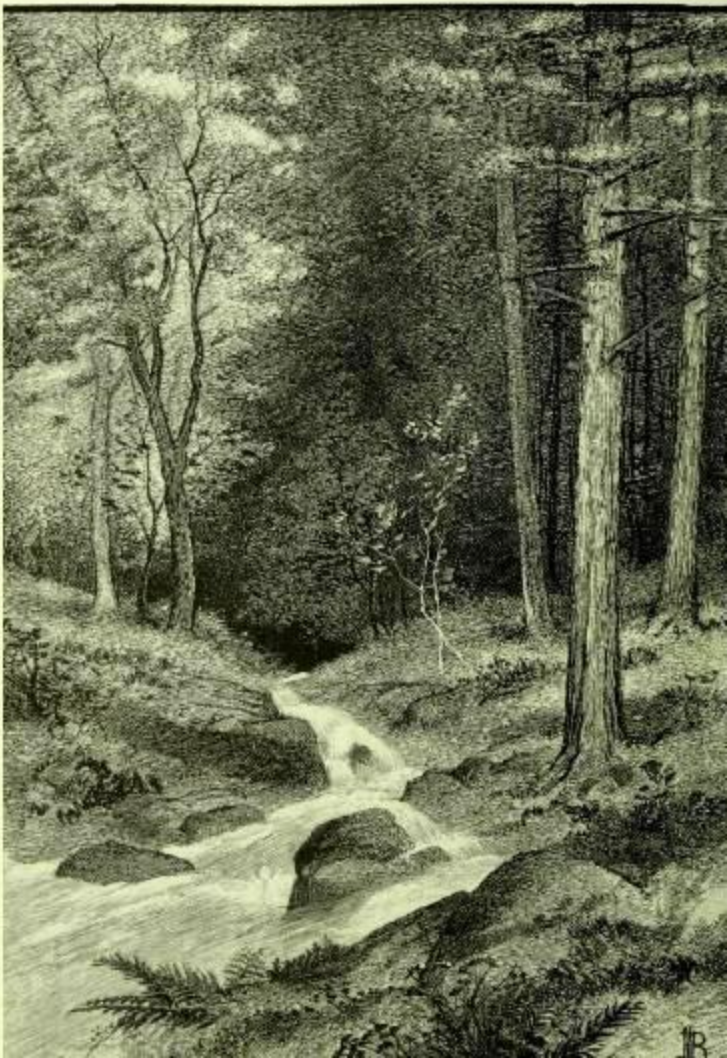

जॉन ने जैसे-तैसे करके लिखना-पढ़ना सीख लिया.

उसे प्रकृति से अपार प्रेम हो गया. फिर उसे जंगलों और नदियों के पास रहने में बड़ा सकून आने लगा.

जॉन जब तक 23 साल हुआ तब तक की उसकी ज़िन्दगी के बारे में हमें बस इतना ही पता है.

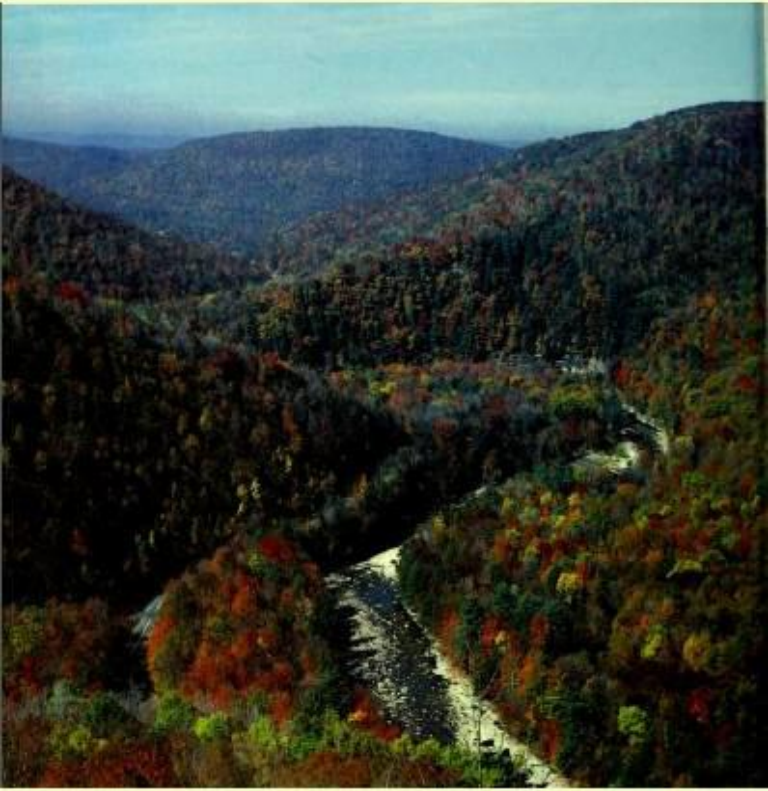

पेनसिलवेनिया का व्योमिंग जंगल

पहली यात्रा

नवम्बर 1797 में एक दिन जॉन पेनसिलवेनिया की पहाड़ियों पर अपनी पहली यात्रा पर निकला.

उसने अपने थैले में कुछ खाना रखा और कुछ सेब के बीज भी रखे. वो नंगे पांव चल रहा था पर उसका दिल बेहद खुश था.

कुछ समय बाद पहाड़ियों के घने जंगलों में से सूरज चमकने लगा. जॉन कोई सौ मील पैदल चला होगा. और फिर अचानक वहां पर बर्फ (स्नो) गिरने लगी.

बहुत तेज़ बर्फ गिरी. जब तक बर्फ गिरना बंद हुई तब तक तीन फीट स्नो गिर चुकी थी.

जॉन ने एक सुरक्षित स्थान पर अपना कैंप लगाया. उसने अपने कोट से कपड़े की पट्टियां फाड़कर उन्हें अपने पैरों पर बाँधा.

उसने कुछ पेड़ों की छाल को अपने पैरों में बांधकर स्नो-जूते बनाए.

उसके बाद उसने बर्फ में अपनी यात्रा ज़ारी रखी.

वसंत के मौसम तक वो वारेन, पेनसिलवेनिया के पास पहुँचा.

वहां पर नदी के पास जॉन ने कुछ सेब के बीज बोए.

अभी तक पेनसिलवेनिया के उस इलाके में बहुत लोग आकर नहीं बसे थे. पर जॉन को इतना पता था कि जल्द ही वहां पर लोग आकर बसेंगे, और फिर उन्हें सेब के पेड़ों की ज़रुरत होगी.

बसने वाले लोगों ने जंगली क्षेत्र के
पेड़ों को काटकर अपने घर बनाए

किसानों का प्रिय सेब का रस - साइडर निकालने का यंत्र

वहां पर बसने वाले लोग सेब को पकाकर उससे एप्पल बटर ओर और एप्पल सॉस बनाते थे. सेबों से वे एप्पल साइडर भी बनाते थे. वो सेब बेचकर अन्य ज़रुरत की चीज़ें खरीदते थे.

ज़मीन की सफाई बहुत कठिन काम था

इसलिए जॉन हमेशा एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा करता रहा. वो वहां जाकर ज़मीन साफ़ और समतल करता और फिर वहां सेब के बीज बोता. पौधशाला की सुरक्षा के लिए वो उसके चारों ओर कंटीली झाड़ियाँ लगाता.

साल में एक बार वो उन पौधशालाओं का निरीक्षण ज़रूर करता था. जब तक वहां पर बसने के लोग आते तब तक सेब के पेड़ थोड़े बड़े हो जाते. फिर जॉन अपने सेब के पेड़ों का व्यापार करता और उन्हें बेच देता.

उसके बाद से यही जॉन का पेशा बन गया. फिर कुछ समय के बाद लोग जॉन को जॉनी एप्पलसीड के नाम से बुलाने लगे.

जॉन चैपमैन ने पेनसिलवेनिया, ऑहियो
ओर इंडिआना में सेब के पेड़ लगाए

ऑहियो में गुज़रे दिन

1800 तक जॉन ऑहियो की यात्रा कर चुका था. वहां पर बसने वाले लोगों में कुछ लोग झगड़ा-फसाद करने वाले भी थे. पर जॉन की हरेक व्यक्ति से अच्छी बनती थी. वो किसी से नहीं लड़ता था.

1809 तक जॉन ने ऑहियो और पेनसिलवेनिया में कई स्थानों पर पौधशालाएं लगाईं थीं. उनके कारण जॉन को बहुत मेहनत और यात्रा करनी पड़ती थी. पर जॉन को यह सब कुछ करने में बड़ा मज़ा आता था.

1812 की गर्मियों में स्थानीय इंडियन लोगों ने ऑहियो पर आक्रमण किया. उसके लिए कोई भी नेटिव (स्थानीय) अमेरिकंस को दोष नहीं दे सकता था. स्थानीय आदिवासियों के साथ गोरों ने बहुत अन्याय किया था.

जॉन चैपमैन की नेटिव अमेरिकंस के साथ अच्छी दोस्ती थी. पर जॉन नहीं चाहता था कि कोई भी मारा जाए या आहात हो.

इसलिए नेटिव अमेरिकंस के हमले से पहले जॉन सभी गोरे वाशिंदों के घर गया ओर उसने उन्हें हमले की पूर्व सूचना दी.

जॉन ने उत्तरी ओर मध्य ऑहियो में करीब 20 साल काम किया. उसने कुछ ज़मीन भी खरीदी. बाकी ज़मीन उसने बटाई पर दी. पर वो ज़्यादातर यात्रा ही करता था.

कभी-कभी वो पत्तों के ढेर का पलंग बनाकर उसपर सो जाता था, या फिर किसी पेड़ के बड़े कोटर में सो जाता था. उसे पीठ पर लेटे हुए सितारों को निहारने में बहुत मज़ा आता था.

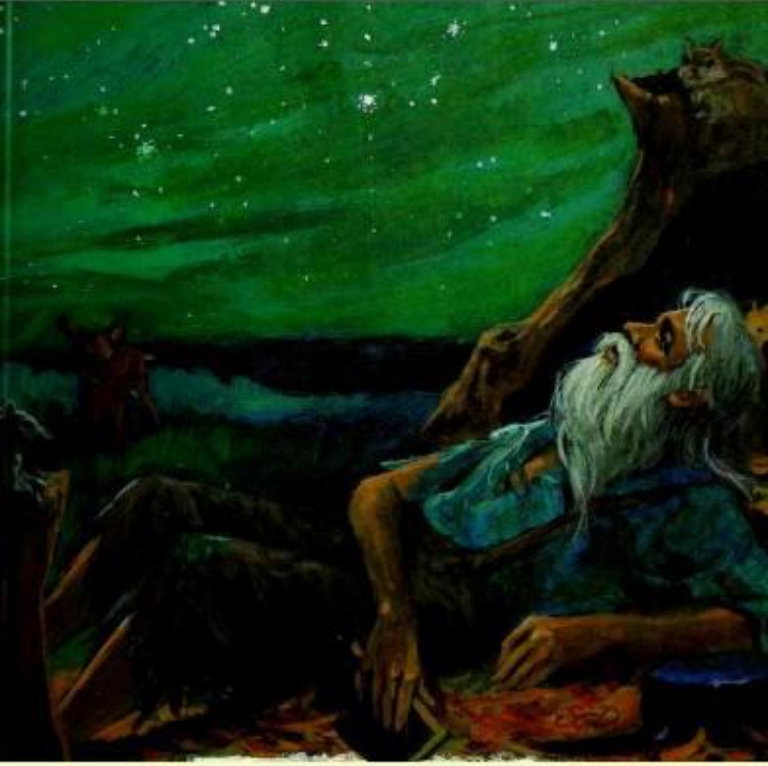

“सितारों को निहारते हुए उसे ऐसा लगता था जैसे परियां भगवान की प्रशंसा कर रही हों,” उसने कहा, “क्यूंकि भगवान ने ही इस अच्छी दुनिया का निर्माण किया था.”

जॉन अक्सर मक्का या आलू ही खाता था. उन्हें वो अलाव पर भूनता था. वो भोजन के लिए या शिकार के लिए जानवरों को नहीं मारता था.

पर एक बार उसे एक सांप (रेटिल स्नेक) ने काटा, जिसे जॉन ने बाद में मार डाला.

सांप को माते वक्त जॉन की आँखों में आंसू थे. “इसका मुझे बहुत दुःख है,” उसने कहा.

एक बार जब जॉन ने कीड़ों और पतंगों को कैंप-फायर पर उड़ते और जलते हुए देखा तो फिर उसने आग बुझा दी और ठंड में ही बैठा रहा.

कभी-कभी उस इलाके में बसे गोरे अपने बूढ़े घोड़ों को जंगल में मरने के लिए छोड़ देते थे. जॉन उन घोड़ों को अन्य लोगों के पास रखता था और घोड़ों की देखभाल के लिए उन्हें पैसे देता था.

जॉन को बच्चे बहुत पसंद थे. वो उन्हें अपनी यात्राओं की रोचक कहानियाँ सुनाता था. वो बच्चों को रिबन, रंगीन मोती और सुन्दर कपड़े भेंट करता था.

जॉन को एक लड़का मिला जिसका नाम था डेविड हंटर. जब डेविड सोलह साल का था तब उसके माता-पिता का देहांत हो गया. उसके बाद डेविड को अपने आठ भाई-बहनों की देखभाल करनी पड़ी.

जॉन ने डेविड को सेब का बाग़ शुरू करने के लिए 60 सेब के पेड़ दिए. डेविड ने बहुत मेहनत की और अंत में बगीचे में 600 पेड़ लगाए.

जॉन सेब के पेड़ों को लगाता तो था, पर साथ-साथ वो खुले दिल से सेब के पौधे गरीब लोगों में बांटता भी था.

अजीब दिखने वाला बूढ़ा

जॉन क्या पहनता था इसकी उसे कोई परवाह नहीं थी. वैसे वो देखने में अजीबो-गरीब ज़रूर लगता था पर वो हमेशा साफ़-सुथरा रहता था.

अक्सर वो अन्य लोगों द्वारा दिए पुराने कपड़े ही पहनता था.

कभी-कभी उसे अपने जूतों को पैरों के साथ डोरी से बांधना पड़ता था.

कभी-कभी वो नंगे पैर ही चलता था.

एक आदमी ने कहा कि जॉन के पैरों के तलवे हाथी की चमड़ी जैसे दिखते थे. जॉन कभी किसी फौजी की पुरानी हैट पहन लेता था या फिर वो अपने हाथ से बनी गत्ते की टोपी पहनता था.

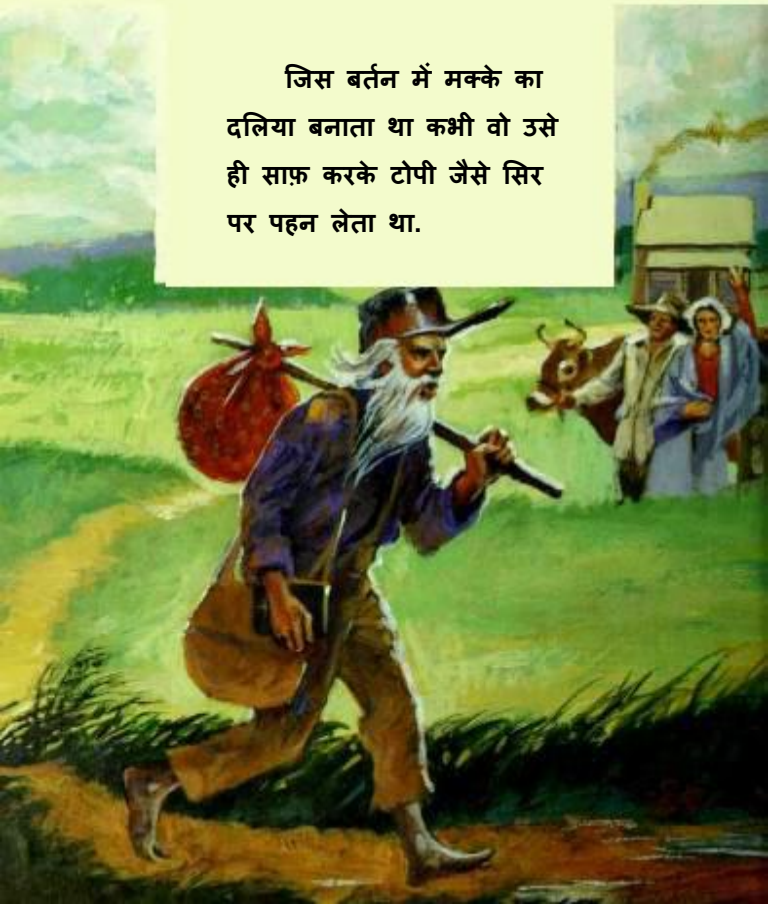

जिस बर्तन में मक्के का दलिया बनाता था कभी वो उसे ही साफ़ करके टोपी जैसे सिर पर पहन लेता था.

ग्रीनफ़ील्ड, इंडिआना

1928 तक जॉन ऑहियो से होता हुआ पश्चिम में इंडिआना पहुँच गया था.

वहां की ज़मीन दलदली और गीली थी.

पर जॉन को पता था कि जल्द ही वहां पर भी गोरे आकर बसेंगे और अपने नए घर बनायेंगे.

इसलिए उसने वहां भी पेड़ लगाने शुरू किये.

कुछ समय बाद जॉन की वहां पर बसने वालों से अच्छी जान-पहचान हो गई.

कई बार जॉन उनके ही घरों में सो जाता था.

पर वो हमेशा ज़मीन पर, अलाव के पास ही सोता था.

जॉन लोगों को अपने धर्म के बारे में बताता था.

वो वहां पर लोगों के साथ बैठता था.

फिर वो बाइबिल खोलकर कहता,

"ताज़ी खबर, सीधे स्वर्ग से."

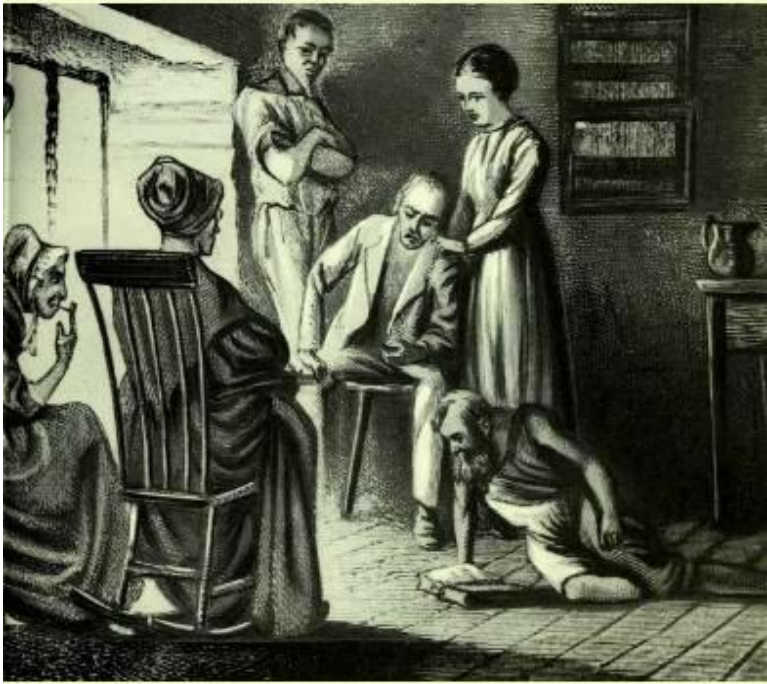

जॉन चैपमैन, ज़मीन पर बैठकर वहां पर
बसे लोगों को बाइबिल पढ़कर सुनाता था

इस तरह सालों बीते. एक दिन जॉन को खबर मिली कि उसकी फोर्ट वायने, इंडिआना स्थित पौधशाला की चारदीवारी को तोड़कर जानवर अन्दर घुस गए थे. जॉन अपने पेड़ों को बचाने के लिए वहां जल्दी गया.

जॉन के मित्र - वोर्थस की वहां पर एक कुटिया थी. वहां पर जॉन अपने मित्र के साथ ही रहा.

पर अब वो बिल्कुल थक गया था और उसे तेज़ बुखार था.

17 या 18 मार्च, 1845 को जॉन चैपमैन का वोर्थस की कुटिया में देहांत हुआ.

उसकी मौत के समय के बारे में किसी को भी पक्की तरह नहीं पता.

ऐसा सोचना बहुत अच्छा होगा कि जिस दिन जॉन चैपमैन का देहांत हुआ उस दिन सेब के पेड़ों पर फूल खिले थे

कुछ लोगों का कहना है कि जिस दिन जॉन चैपमैन मरा उस दिन सेब के पेड़ों पर फूल खिले. पर इस बात का कोई आधार नहीं है क्योंकि सेब के पेड़ों पर मध्य मार्च में ही फूल लगते हैं.

जॉन को पास के ही कब्रिस्तान में दफनाया गया.

उसकी कब्र कहाँ है? इसका किसी को भी पक्का नहीं पता.

पर बाद में लोगों ने वहां एक पत्थर की तख्ती लगाई जिससे लोग जॉनी एप्पलसीड को भूलें नहीं.

उस पत्थर पर यह शब्द खुदे हैं,

“वो औरों के लिए जिया.”

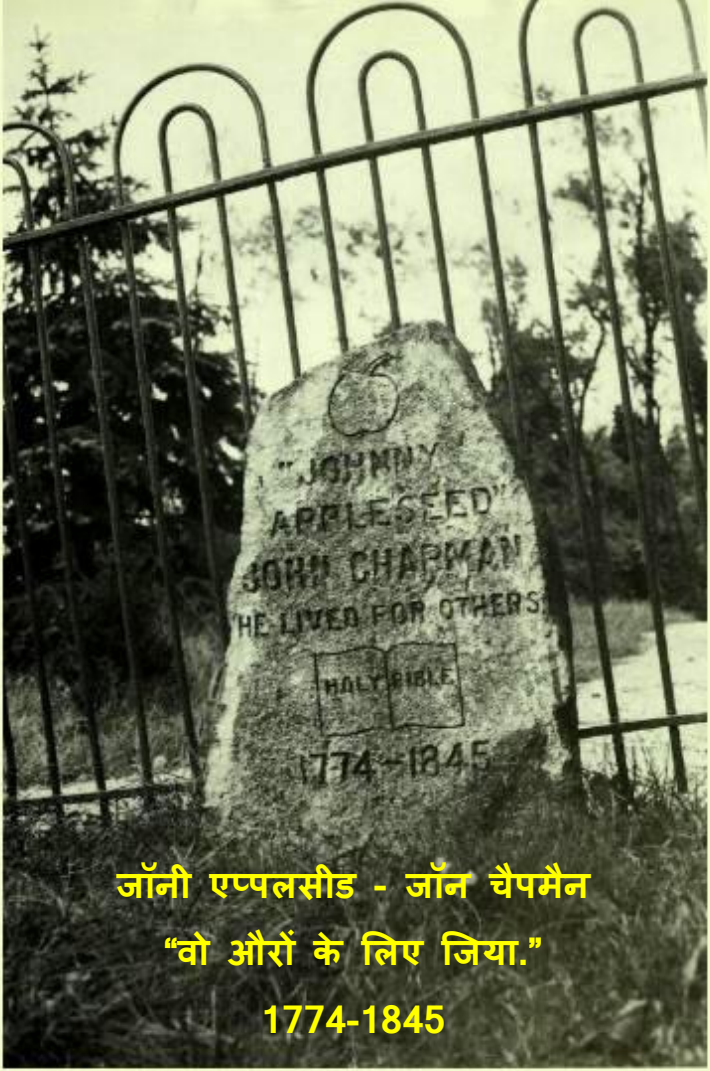

जॉनी एप्पलसीड - जॉन चैपमैन

“वो औरों के लिए जिया.”

1774-1845

कुछ और कहानियाँ

जब जॉन जिंदा था तभी से लोगों ने उसके बारे में कहानियां सुनाना शुरू कर दीं थीं.

क्योंकि जॉन अन्य लोगों से बहुत अलग था.

कुछ लोगों के अनुसार वो अपने तलवों की गर्मी से बर्फ पिघला सकता था.

कुछ के अनुसार एक बार जॉन के पैरों तले एक कीड़ा दबकर मर गया था. फिर उसने अपने पैरों को सजा देने के लिए नंगे पैर चलना शुरू किया.

कुछ अन्य लोगों ने जॉन के बारे में दुखी प्रेम-कथाएं गढ़ीं.

उन्हें यह कभी समझ में ही नहीं आया कि जॉन ने शादी क्यों नहीं की.

जॉन की मृत्यु के बाद यह किस्से-कहानियां बड़ी तादाद में फैलते रहे.

कुछ लोगों के अनुसार जॉन ने प्रशांत महासागर तक सेब के पेड़ बोए.

कुछ लोगों के अनुसार जब कोई इंसान जंगल में मुश्किल में फंस जाता है तो जॉन चैपमैन का भूत आकर उसकी मदद करता है.

एक कहानीकार ने जॉन को एक कवि और संगीतकार बताया.

लोगों ने जॉन चैपमैन पर तमाम कवितायँ और गीत भी लिखे.

उसपर लोगों ने कई कार्टून भी बनाए.

ऑहियो राज्य ने जॉन चैपमैन के नाम पर एक हाईवे भी बनाई है.

क्या तुम सोचते हो कि यह सेब के पेड़ उन पेड़ों के बीजों से उपजे जिन्हें जॉन चैपमैन ने बहुत सालों पहले लगाया था?

जॉन चैपमैन के लगाए सेब के पेड़ों में से अब कोई भी जिंदा नहीं बचा है. पर उनमें के कई पेड़ एक बहुत लम्बे अर्से तक जिंदा रहे होंगे. उन पेड़ों के कुछ बीज शायद आज भी जिंदा हों!

जॉनी एप्पलसीड को यह बात शायद उसपर गढ़ी मनगढंत कहानियों से ज्यादा पसंद आए.

मुख्य तारीखें

1774	26 सितम्बर – लियोमिन्स्टर, मेसाचुसेट्स में जन्म
1780	लॉन्गमीडोज, मेसाचुसेट्स गया
1797	उत्तर-पश्चिम में पेनसिलवेनिया गया
1800	ऑहियो गया
1812	स्काउट जैसे काम किया और ऑहियो के वाशिंदों को अमरीकी इंडियन के आक्रमण से आगाह किया
1828	उसने फोर्ट वायने, इंडिआना तक यात्रा की
1845	17 या 18 मार्च को फोर्ट वायने, इंडिआना में मृत्यु